National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2026; 1(66): 114-116
© 2026 NJHSR
www.sanskritarticle.com

अनुश्री कसनियाल
शोधच्छात्रा.
लक्ष्मण सिंह महर परिसर,
पिथौरागढ।

Correspondence:
अनुश्री कसनियाल
शोधच्छात्रा.
लक्ष्मण सिंह महर परिसर,
पिथौरागढ।

वैदिक याग मीमांसा

अनुश्री कसनियाल

शोध सार - वैदिक वाङ्मय में ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद में यज्ञों का अत्यधिक महत्व है। पर्यावरण की सुरक्षा, वायुमण्डल की शुद्धता, पर्यावरण में व्याप्त विविध रोगों के नाश एवं चिकित्सा के लिए यज्ञ महत्वपूर्ण हैं। वेदों में वर्णित यज्ञ चिकित्सा भी पर्यावरण में व्याप्त विविध रोगों का नाश कर व्यक्ति को स्वस्थ व निरोगी बनायें रखती है। यज्ञ प्रक्रिया व्यक्ति को शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य एवं निरोगता प्रदान करती है। यज्ञों से निकलने वाला धूम पर्यावरण में व्याप्त रोगाणुओं का नाश करता है। यज्ञ चिकित्सा के अतिरिक्त वेदों में अग्निहोत्र, दर्श पूर्णमास, चातुर्मास्य, सौत्रामणी, अग्निष्टोम, वाजपेय आदि यज्ञों के आध्यात्मिक एवं दार्शनिक महत्व का वर्णन किया गया है।

बीज शब्द - यज्ञ, चिकित्सा, हवि, याग, यज्ञाग्नि, अनुष्ठान, प्राकृतिक, श्रौतयाग, शुद्धता, आरोग्य, ध्वनि।

वेदों में वर्णित विविध यज्ञों का परिचय- अथर्ववेद[1] में वर्णन प्राप्त होता है कि सर्वप्रथम अथर्वा ऋषि ने यज्ञ पद्धति का अविष्कार किया। अंगिरा ऋषि ने यज्ञ की उपयोगिता पर मनन चिन्तन किया और फलस्वरूप अन्न आदि फल प्राप्त किया। ऐतरेय ब्राह्मण[2] में समस्त श्रोतयज्ञों को पांच भागों में विभाजित किया गया है। अग्निहोत्र, दर्शपूर्णमास, चातुर्मास्य, पशु तथा सोमयाग,परन्तु स्मृतियों एवं कल्पग्रन्थों में स्मार्त एवं श्रोतयागों को मिलाकर यज्ञों की संख्या 21 मानी गयी है। इनको दो भागों में बाटा गया है। गृह्ययाग तथा श्रोतयाग। श्रोतयागों को पुनः इनको दो भागों में बाटा गया है। हविर्याग अर्थात् जिनमें घी, दूध, पुरोडाश आदि हवि के रूप में डाला जाता है। सोमयाग जिनमें सोमलता के रस से यज्ञ में आहुति दी जाती है। गृह्ययागों को पाकयज्ञ के नाम से भी जाना जाता है। गृह्यसूत्रों में वर्णित यज्ञ गृह्ययाग हैं। इनके लिए गृह्य अग्नि उपयोग में लाते है। इसे आवसथ्य अग्नि भी कहते हैं। श्रौतसूत्रों में वर्णित यागों को ज्ञौतयाग कहते हैं। हविर्याग और सोमयाग श्रौतयाग हैं।

हविर्याग

अग्निहोत्र - प्रतिदिन प्रातः सायं किया जाने वाला यज्ञ है। इसमें घृत, चावल, जौ, दुग्ध आदि की आहुति दी जाती है।

दर्श पूर्णमास - यह अमावस्या और पूर्णिमा को किया जाने वाला विशेष यज्ञ है। पूर्णिमा को किए जाने वाले यज्ञ में अग्नि में सोम, घी और पुरोडाश की आहुति दी जाती है।

आग्रयण इष्टि- यह नव सस्येष्टि यज्ञ है। नई फसल होने पर यह शरद् में धान और वसन्त में यव (जौं) की आहुति दी जाती है।

चातुर्मास्य - यह प्रत्येक चैथे मास में पूर्णिमा को किया जाता है। चार मास में होने के कारण इसे चातुर्मास्य कहा जाता है।

सौत्रामणी याग- यह याग सुत्रामा के लिए होता है। सुत्रामा शब्द इन्द्र के लिए प्रयुक्त हुआ है। यह याग इन्द्र देवता से संबंधित है। अतः इस याग को सौत्रामणी कहते है। राजा राज्याभिषेक के समय श्री वृद्धि के लिए यह यज्ञ करते हैं।

पितृयज्ञ - माता पिता की सुख समृद्धि एवं उनके दीर्घायुष्य के लिए यह याग किया जाता है। अथर्ववेद[3] में प्राप्त वर्णन के अनुसार माता पिता को दुख एवं पीड़ा देने वाले व्यक्ति के लिए प्रायश्चित कर्म करने का वर्णन प्राप्त होता है।

सोमयाग

वेदों में सोमयाग का वर्णन प्राप्त होता है। अथर्ववेद[4] में सोमयाग के माध्यम से धनलाभ, शत्रुनाश, ईश्वर प्राप्ति का वर्णन प्राप्त होता है। सोमयाग में सोमरस के माध्यम से यज्ञ में आहुति दी जाती है। सोमयाग कालगणना की दृष्टि से तीन प्रकार के होते है। प्रथम- एकाह अर्थात् एक दिन चलने वाला याग। द्वितीय-अहीन दो दिन से लेकर 12 दिन चलने वाला याग है। तृतीय- सत्रयाग 13 दिन से लेकर वर्ष भर चलने वाला याग है। सोमयाग में होता आदि ऋत्विजों के सहायक तीन ऋत्विज अन्य होते हैं। इस प्रकार सोमयाग में ऋत्विजों की कुल संख्या 16 हो जाती है। अग्निष्टोम, उक्थ, षोडशी, अतिरात्र, ज्योतिष्टोम, वाजपेय, राजसूय, अश्वमेध आदि सोमयाग के अंतर्गत आते हैं ।

वैदिक यज्ञों की उपयोगिता - वैदिक यज्ञ न केवल धार्मिक, आध्यात्मिक एवं धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है अपितु उनकी सामाजिक, पर्यावरणीय एवं मनोवैज्ञानिक उपयोगिता भी है। यज्ञ के अवसर पर किया जाने वाला सस्वर मंत्रपाठ और सामगान ध्वनि प्रदूषण को रोकने में सहायक होता है। अथर्ववेद[5] में प्राप्त वर्णन के अनुसार यक्ष्मा (तपेदिक) ज्वर, गंडमाला आदि रोगों की चिकित्सा यज्ञ चिकित्सा द्वारा की जाती है। यज्ञ क्रिया मनुष्य को मानसिक शान्ति भी प्रदान करती है। यज्ञ के माध्यम से व्यक्ति को सद्भाव, विचार शुद्धि, शिवसंकल्प एवं ओज तेज की प्राप्ति होती है।

यज्ञों का महत्व - यज्ञ एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा पर्यावरण में कार्बनडाई ऑक्साइड एवं आस्सीजन का संतुलन बना रहता है। प्रकृति में एक प्राकृतिक एवं नैसर्गिक प्रक्रिया के अनुसार प्रत्येक पदार्थ पुनः अपने मूल स्थान में पहुचता है। ऋतुचक्र वर्षाचक, सौरचक्र आदि प्रकृति एवं व्यवस्था के अनुसार नियमबद्ध एवं व्यवस्थित रहतें हैं। उसी प्रकार यज्ञ प्रक्रिया भी प्राकृतिक नियम एवं व्यवस्था के अनुरूप है। ऋग्वेद एवं यजुर्वेद[6] में प्राकृतिक यज्ञ प्रक्रिया का वर्णन करते हुए कहा गया है, वर्षा चक्र रूपी यज्ञ में वसन्त घी है। ग्रीष्म ऋतु समिधा एवं शरद् ऋतु हवि के समान है। वसन्त ऋतु के बाद ग्रीष्म, ग्रीष्म ऋतु के बाद वर्षा, वर्षा ऋतु के बाद शरद् एवं शरद् ऋतु के बाद वसन्त ऋतु का आगमन होता है। इस प्रकार वर्षचक्र पूर्ण होता है। यह प्रक्रिया अणु परमाणु से लेकर सूर्य चन्द्र आदि तक सर्वत्र चल रही है। इसका नाम ही यज्ञ प्रक्रिया है।

यत् पुरूषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरदः हविः।। ऋग्वेद 10.90

श्रीमद्भगवद् गीता में यज्ञ के माध्यम से वर्षा ऋतु के आगमन एवं देवताओं के प्रसन्न होने का वर्णन प्राप्त होता है।

देवान् भावयतानेन ते देवाः भावयन्तुः वः।
परसारं भावयन्तः ज्ञेयः परमवाटस्यध।। गीता 3.11

यज्ञों का आध्यात्मिक महत्व - ब्राह्मण ग्रन्थों में यज्ञ को विष्णु का स्वरूप माना गया है,'यज्ञ वै विष्णुः'। वेदों में यज्ञ परमात्मा के स्वरूप माने गए है। यज्ञ परमात्मा की प्राप्ति के प्रमुख साधन हैं। मानव के हृद्य में व्याप्त आत्मज्योति को यज्ञाग्नि के माध्यम से ही उद्भूत किया जाता है। यज्ञ कर्म व्यक्ति को देहशुद्धि के साथ ही अन्तःकरण की शुद्धता भी प्रदान करते हैं। भगवद्गीता[7] के अनुसार यज्ञ क्रिया द्वारा मनुष्य अपने पाप कर्म एवं अशुद्धियों का शमन कर अपने जीवन को शुद्ध एवं परिष्कृत बनाता है। वेदों में यज्ञों के दो मुख्य कार्य बताये गये है। प्रथम -स्वाहा अर्थात् स्व की भावना का पूर्णतया परित्याग। द्वितीय, परमात्मा के चरणों में स्वयं को समर्पित करना। स्व की भावना के परित्याग से ही मनुष्य परहित पर उपकार के कार्यो में प्रवृत्त हो सकता है। परमात्मा के चरणों में आत्मसमर्पण से वह कर्मफलासक्ति एवं कर्मबन्धन से मुक्त हो जाता है। ऋग्वेद[8] में यज्ञ क्रिया के माध्यम से ईश्वर एवं मनुष्य के मध्य दिव्य संबंध स्थापित होने का वर्णन किया गया है। यज्ञ के माध्यम से ही मनुष्य हवि के द्वारा अपनी प्रार्थनायें ईश्वर को समर्पित करता है। यज्ञाग्नि का प्रदीप्त होना मानव हृद्य में आत्मज्योति के प्रदीप्त होने का संकेत है। आत्मज्योति के प्रदीप्त होने पर अज्ञान का अवारण क्षीण होता है तथा चैतन्य का विकास होता है। चैतन्य के विकास से ही अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय तथा आनन्दमय कोश जागृत होते हैं।

यज्ञों में पशुबलि का निषेध - अथर्ववेद[9] में प्राप्त वर्णन के अनुसार यज्ञ कार्य में पशु बलि का निषेध किया गया है। अथर्ववेद के अतिरिक्त यजुर्वेद में भी यज्ञ कार्य में पशुबलि का निषेध किया गया है। वैदिक श्रोतसूत्रों में यत्र-तत्र यज्ञों में पशुबलि का वर्णन प्राप्त होता है। श्रोतसूत्रों में वर्णित पशुबलि की कुप्रथा का दुष्परिणाम यह हुआ कि जैन व बौद्ध धर्म के प्रवर्तको ने यज्ञ पद्धति को ही अमान्य घोषित कर दिया और अपने धर्म मे ही इस वैज्ञानिक पद्धति का बहिष्कार कर डाला।

यज्ञचिकित्सा

वैदिक मंत्र शुचिता एवं पवित्रता के बोधक हैं। शूचिता उत्तम स्वास्थ का आधार है। यज्ञों के माध्यम से वातावरण में व्याप्त रोगाणुओं का नाश होता है। वेदों में मंत्रचिकित्सा, विषचिकित्सा के साथ ही यज्ञचिकित्सा का वर्णन भी किया गया है। वैदिक काल में यज्ञ सम्पादन का उद्देश्य न केवल देवताओं की अराधना था अपितु वैदिक यज्ञ ऋतु परिवर्तन से होने वाले विविध रोगों के उपचार के लिए भी सम्पन्न किये जाते थे। अग्नि में सम्पन्न किये जाने वाले यज्ञ देवताओं को हवि देने के साथ ही शारीरिक निरोगता एवं आरोग्य प्रदान करते हैं। वेदों में यज्ञों को उच्च एवं पवित्र स्थान प्रदान किया गया है। ब्राह्मण ग्रन्थों में यज्ञों को विष्णु का स्वरूप माना गया है। अथर्ववेद में यज्ञों के आध्यात्मिक स्वरूप के साथ ही यज्ञों के माध्यम से रोगनिवारण, दीर्घायुष्य प्राप्ति का वर्णन भी प्राप्त होता है।

अथर्ववेद का एक सम्पूर्ण सूक्त[10] वैदिक यज्ञों के माध्यम प्राप्त होने वाले आयुष्य एवं निरोगता से संबंधित है। अथर्ववेद के तृतीय काण्ड के 11वें सूक्त में हवन द्वारा दीर्घायुष्य का वर्णन किया गया है। इस सूक्त में कुल 8 मंत्र हैं। इन8 मंत्रों में यज्ञों का चिकित्सा से संबंध स्थापित किया गया है। प्रथम मंत्र में ज्ञात रोगों तथा अज्ञात रोगों के उपचार हेतु यज्ञचिकित्सा का वर्णन किया गया है। ज्ञात रोग वह हैं, जिन्हें उनके लक्षणों के आधार पर आसानी से पहचाना जा सकता है तथा वैद्य रोग के लक्षण के आधार पर जिनकी चिकित्सा करते हैं। यज्ञचिकित्सा द्वारा राजयक्ष्मा, संधिवात, कुष्ठ, गण्डमाला आदि ज्ञात रोगों का उपचार होता है। अज्ञात रोग वह होते हैं, जिनके लक्षण स्पष्ट रूप से लक्षित नही होते हैं तथा जिनके उपचार एवं औषधि के विषय में वैद्यों में पर्याप्त मतभेद रहता है। यज्ञ चिकित्सा द्वारा ज्ञात व अज्ञात दोनो प्रकार के रोगों का उपचार किया जाता है। यज्ञ चिकित्सा द्वारा अग्नि में रोगनाशक औषधियों को हवि रूप में अर्पित किया जाता है। यज्ञ में औषधियों को हवि रूप में अर्पित करने के कारण यज्ञ चिकित्सा को हवन चिकित्सा के नाम से भी जाना जाता है।

अथर्ववेद[11] में हवन चिकित्सा के महत्व का वर्णन करते हुए कहा गया है, हवन चिकित्सा के माध्यम से मृत्यु की अवस्था तक पहुचंने वाले तथा आयु का नाश होने वाले मनुष्यों को भी पुनःजीवन प्रदान किया जाता है। हवन चिकित्सा द्वारा व्यक्ति दीर्घायु जीवन प्राप्त करता है। अथर्ववेद[12] के एक मंत्र में यज्ञों को सहस्रों शक्तियों एवं वीर्य युक्त कहा गया है। अर्थात् यज्ञ चिकित्सा के माध्यम से शारीरिक रोगों का उपचार ही नही वरन् शक्ति, बल एवं वीर्य में वृद्धि भी होती है। बलवृद्धि से मनुष्य शारीरिक व्याधियों से रहित रहता है तथा वीर्य वृद्धि से मनुष्य की प्रजनन क्षमता में वृद्धि होती है। अथर्ववेद[13] के एक मंत्र में यज्ञों के माध्यम से इन्द्र, अग्नि, सविता, वृहस्पति आदि देवताओं द्वारा शतायुषा अर्थात् सौ वर्ष की आयु प्रदान करने का वर्णन किया गया है। इन्द्र, अग्नि आदि देवताओं के निमित्त किये जाने वाले यज्ञों से मनुष्यों को शतायु जीवन की प्राप्ति होती थी। दीर्घायुष्य के साथ ही यज्ञचिकित्सा द्वारा ज्वर, संधिवात, अपचित् आदि रोगों का उपचार भी किया जाता है। अथर्ववेद[14] में राजयक्ष्मा रोग के उपचार के लिए यज्ञचिकित्सा का वर्णन प्राप्त होता है। यज्ञों से निकलने वाला धूम वातावरण में व्याप्त रोगाणुओं का नाश भी करता है। शुद्ध एवं प्रदूषण रहित वातावरण प्रदान करने की दृष्टि से भी वैदिक यज्ञ महत्वपूर्ण हैं। यज्ञ चिकित्सा द्वारा रोगनाशक कृमियों का भी नाश होता है। रोगनिवारण, दीर्घायुष्य, वातावरण की शुद्धता एवं पवित्रता की

दृष्टि से वेदों में वर्णित यज्ञ चिकित्सा उत्तम चिकित्सा पद्धति है। वैदिक युग में सम्पन्न होने वाले यज्ञ वैज्ञानिक दृष्टि से भी उपयोगी थे। याज्ञिक क्रिया वातावरण में ऑक्सीजन एवं कार्बनडाईआक्साइड गैसों में भी संतुलन बनायें रखती है तथा वैदिक यज्ञों से निकलने वाला धूम रोगनाशक रोगाणुओं एवं कृमियों का नाश भी करता है।

निष्कर्ष - वैदिक यज्ञ केवल धार्मिक अनुष्ठान नही अपितु जीवन को संतुलित, शुद्ध व समृद्ध बनायें रखने का भी समग्र दर्शन है। वैदिक यज्ञ सामाजिक, धार्मिक, आध्यात्मिक व पर्यावारणीय दृष्टि से भी महत्वपूर्ण हैं। वैदिक यज्ञ आत्मशुद्धि व ईश्वर से जुडने का भी माध्यम हैं। वैज्ञानिक दृष्टि से भी वैदिक यज्ञों की महत्ता है। यज्ञ की प्रक्रिया में ध्वनि (मंत्र) ऊर्जा (अग्नि) और पदार्थ (आहुति) का संयोजन होता है। इसे ऊर्जा परिवर्तन और सकारात्मक कंपन उत्पन्न करने वाली प्रकिया के रूप में भी देखा जा सकता है। वैदिक यज्ञ त्याग, सेवा तथा दान के भी प्रतीक हैं। वैदिक यज्ञ के द्वारा व्यक्ति में परोपकार की भावना भी विकसित होती है। प्रकृति व मानव जीवन में संतुलन बनाए रखने, प्राकृतिक चक्र व वर्षाचक्र में संतुलन बनाए रखने हेतु भी वैदिक यज्ञ महत्वपूर्ण है।

सन्दर्भ-

[1] अथर्ववेद 20.25.5

[2] स एषः यज्ञः पंचविधः अग्निहोत्रं दर्शपूर्णमासौ चातुर्मास्यानि पशुः सोमः। ऐतरेय ब्राह्मण

[3] अथर्ववेद 6.120.1

[4] अथर्ववेद 20.67.1

[5] अथर्ववेद 3.11.1

[6] यजुर्वेद 31.14

[7] यज्ञभिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषै। गीता अध्याय 4

[8] ऋग्वेद 1.1.1

[9] अथर्ववेद 7.5.5

[10] अथर्ववेद 3.11.1-8

[11] अथर्ववेद 3.11.2

[12] अथर्ववेद 3.11.3

[13] अथर्ववेद 3.11.4

[14] अथर्ववेद 20.91.6

सहायक सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. वैदिक साहित्य एवं संस्कृति, कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2021।
2. वैदिक यज्ञः प्रतीकात्मक मीमांसा, सुमन शर्मा, प्रतिभा प्रकाशन, 2012।
3. यज्ञ माहात्म्य, पण्डित श्रीवेणीरामशर्मा गौड, चैखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 1999।
4. यज्ञ का विज्ञान, प्रो. दिनेश कुमार सिंह एवं भारती सिंह, पी.के. प्रकाशन, 2023।
5. अथर्ववेद संहिता, रामस्वरूप शर्मा गौड, चैखम्बा विद्याभवन वाराणसी, 2021